हिंदी साहित्य
और
समाज

संपादक

प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार

प्रा. डॉ. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna
Estd.1983

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

प्रो. डॉ. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
देगलूर महाविद्यालय देगलूर

परिकल्पना

© सम्पादकाधीन

प्रथम संस्करण : 2023
मूल्य : ₹ 595
ISBN : 978-93-95104-12-8

संपादकीय

साहित्य परिस्थितियों तथा युगीन परिदृश्य की उपज है। साहित्य का मूल समाज जीवन है। साहित्य समाज का दर्पण होता है और समाज का निर्माण संस्कृति से होता है। वास्तव में देखा जाए तो साहित्य समाज और संस्कृति का अन्योन्याश्रित संबंध है, यह एक दूसरे के अनुरूप है।

साहित्य तत्कालीन समाज की वास्तविकता को अभिव्यक्त करता है। विश्व का कोई भी साहित्य हो उस साहित्य को लिखने वाला साहित्यकार अपने समय का साक्षी होता है। समाज में जो कुछ अपने चक्षुओं से देखता है, उसी की अभिव्यक्ति प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपने साहित्य में करता है। जिससे समाज को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है, सही दिशा मिलती है, जिस पर चलकर हम एक श्रेष्ठ समाज का निर्माण कर सकते हैं। साहित्य में मानव जीवन के अतीत का भी वर्णन मिलता है, वर्तमान का चित्र भी प्रदर्शित होता है तथा भविष्य के निर्माण की भी प्रेरणा प्राप्त होती है। इसी कारण हम कह सकते हैं कि, साहित्य समाज और संस्कृति का त्रिवेणी संगम है।

हिंदी साहित्य ने लगभग हर विधा में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी भाषा केवल जनसंपर्क या रोजगार की ही भाषा बनकर नहीं रही है बल्कि हिंदी साहित्य जनसमूह के हृदय का वह संवाद है, जो समाज के प्रतिबिंब को हमारे सामने प्रस्तुत कर अपनी संस्कृति से हमें रू-ब-रू कराता है।

मनुष्य के मानसिक संवेग, आंतरिक अनुभूतियां, अतृप्त वासना, दिवास्वप्न, असामान्य व्यवहार, मनोवैज्ञानिक तत्वों का विश्लेषण साहित्य में वर्णन होता रहता है। साहित्य ने समाज जीवन के विभिन्न आयामों का ज्ञान किया है।

समाज में परंपरागत दृष्टिकोण के साथ साथ आधुनिकता बोध के बीज अंकुरित हो गए हैं। समता, स्वतंत्रता, बंधुता, मानवता तथा करुणा जैसे मूल्यों के विकास के कारण धार्मिक सहिष्णुता एवं धर्मनिरपेक्षता प्रमुख रूप से उभरकर आ गई है। प्राचीन मूल्य पुनर्मूल्यांकन और नवमूल्य धारण करने से आधिक

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)
Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya, Purna (Jn)
Estd.1983
PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

अनुक्रम

भूमंडलीकरण और ज्ञानेन्द्रपति की कविता *–डॉ. प्रिया ए.*	13
यशपाल के 'अमिता' उपन्यास में मानवीय मूल्य *–प्रा.डॉ. साळुंके शिवहार भुजंगराव*	20
हिंदी साहित्य में महिला लेखिकाओं का योगदान *–दीप्ति सिंह*	26
हिन्दी में नारी विमर्श *–डॉ. वडचकर एस.ए.*	32
'धोखा' : सहजीवन की समस्या *–डॉ. परविंदर कौर महाजन (कोल्हापुरे)*	36
'प्रवासी हिंदी कहानी में वृद्ध विमर्श' *–डॉ. रजिया शहेनाज शेख अब्दुल्ला*	41
राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत स्वाधीनताकालीन हिंदी काव्य साहित्य *–प्रा. सुनिता मडके*	46
हिन्दी साहित्य में आर्थिक चित्रण *–प्रो. डॉ. राजश्री भामरे*	51
शम्बूक : अधिकार हनन और अभिव्यक्ति प्रतिबंध के प्रति विद्रोह *–प्रो.डॉ. रमेश संभाजी कुरे*	56
21वीं सदी महिला कथालेखन का बदलता स्वरूप *–डॉ. शेख शहनाज अहेमद*	62
स्त्री विमर्श उपन्यास में चित्रित स्त्री समस्याएँ *–डॉ. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे*	69
हिंदी की वैश्विक स्थिति *–डॉ. विजय शिवराम पवार*	76

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn.) Estd. 1983

हिंदी की वैश्विक स्थिति

डॉ. विजय शिवराम पवार
श्री गुरु बुद्धिस्वामी महाविद्यालय, नांदेड

वर्तमान में आज भारत का वैश्विक स्तर पर महत्त्व बढ़ते जा रहा है क्योंकि, भारत विश्व की उभरती अर्थव्यवस्था के रूप में सामने आ रहा है। आज भारत विश्व का सबसे युवा देश होने के कारण यहां पर क्रयशक्ति ज्यादा है। इसलिए आगामी कुछ वर्षों में भारत विश्व की आर्थिक महासत्ता बनने का सामर्थ्य रखता है। ऐसे महान देश की राष्ट्रभाषा हिंदी है। भारत के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ते महत्त्व को देखकर सारा संसार भारत से निकटता बढ़ाने एवं अच्छे संबंध स्थापित करने हेतु प्रयासरत है। हाल ही में विश्व स्तरपर भारत से दृढ़ संबंध स्थापित करने हेतु विश्व के कई शीर्ष नेताओं का विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर भारत से विचार-विमर्श इसका जीता-जागता उदाहरण है। आज संसार के पथ प्रदर्शित के रूप में भारत को देखा जा रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपना वाणिज्यिक व्यापार एवं औद्योगिक संबंध स्थापित करने तथा निवेश बढ़ाने हेतु हिंदी सीखने के लिए अपने आला-अफसरों को हिंदी भाषा का अध्ययन करने के लिए बढ़ावा दे रहे हैं। संपूर्ण विश्व में विभिन्न भाषाएं बोली जाती है, उन्हीं में से एक सशक्त भाषा हिंदी है।

इसके अलावा भारतीय लोग रोजगार हेतु विभिन्न देशों में जाकर वहीं बस गए हैं। जिन प्रवासी भारतीय लोगों ने विभिन्न राष्ट्रों में हिंदी प्रयोग के साथ ही भाईचारा, स्नेह, संस्कृति की एक अलग पहचान बनाकर बढ़ावा देते हुए विभिन्न राष्ट्रों में भारत का गौरव बढ़ाने [illegible] किया है तथा हिंदी को अपना दायरा बढ़ाने में विभिन्न देशों में [illegible] ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हिंदी भाषा यह आज [illegible] से विश्व [illegible] बनने की ओर अग्रसर हो रही है। इस संदर्भ में कृष्ण मित्र [illegible] यह पंक्तियां [illegible]क लगती हैं, "झोपड़ियों से राजभवन तक जिसको जनता [illegible] हिंदी का वह [illegible] विश्व ने भी पहचाना है।"[1] वैसे देखा जाए तो भारतीय साहित्य [illegible]क भाषाओं का साहित्य लिखा गया है। फिर भी इन सभी भाषाओं को एक सूत्र में बांधने का काम केवल हिंदी भाषा में ही है, क्योंकि हिंदी अन्य भाषाओं की तुलना में अनेक अर्थों में विशिष्ट है। हिंदी भाषा यह अनेक बोलियों और भाषाओं के समन्वय से बनी है। इस भाषा की बनावट के लिए विभिन्न इकाइयों का योगदान रहा है। इनमें फोर्ट विलियम कॉलेज, ईसाई मिशनरी, ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, सनातन धर्म-सभा, राष्ट्रीय आंदोलन आदि तथा अनेक विद्वानों के प्रयासों से ही आज हिंदी भाषा यह विश्व स्तर पर फलते-फूलते हुए विश्व भाषा के रूप में विकसित होते दिखाई देती है।

हॉलीवुड के तर्ज पर बॉलीवुड का योगदान : भूमंडलीय हॉलीवुड को आज कौन नहीं जानता। "हॉलीवुड के जरिए अमेरिका दुनिया में कई तरह के काम एक साथ करती है। जैसे स्क्रीन के भूमंडलीय व्यापार से भारी मुनाफे कमाना, इससे जुड़े विज्ञापन तंत्र के जरिए अपने दूसरे व्यापारियों को बढ़ाना, फैलाना, पूंजीवादी विचारधारा तथा अमेरिकी राजनीति का प्रचार-प्रसार करना है। अमेरिकी जीवन शैली के प्रचार से दुनिया का अमेरिकीकरण करना"[2] ठीक इसी तरह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा भी अपना मकसद हासिल करने का प्रयास कर रही है। इसके लिए बॉलीवुड एवं दृक-श्राव्य माध्यमों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। बॉलीवुड ने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा को स्थान दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भूमंडलीकरण के दौर में 'बॉलीवुड' ने भारतीय एवं संसार के सभी दर्शकों तक पहुंचकर भारतीय संस्कृति, आचार-विचार एवं सामाजिक समस्याओं से परिचित कराते हुए सारे विश्व की दृष्टि भारत की ओर आकर्षित कर हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाने का सराहनीय प्रयास किया है। अतः इन फिल्मों के माध्यम से भारत की विभिन्नता में एकता दर्शाने वाले तत्त्वों के संदेशों का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार करने का कार्य बॉलीवुड ने किया है। इस बॉलीवुड का मायाजाल वर्तमान में इतना फैला हुआ है कि, हिंदी फिल्में देखकर आज भिन्न भाषा-भाषी लोग हिंदी की ओर आकर्षित होकर देश-विदेशों में हिंदी सीखने का प्रयास कर रहे हैं।

विदेशी भाषाओं से तुलना : हिंदी एवं अन्य विश्वस्तर की भाषाओं का अध्ययन करने से पता चलता है कि अंग्रेजी भाषा यह अपनी किसी खास विशेषताओं के कारण विश्व स्तर पर फैली है, ऐसा कदापि नहीं बल्कि यह साम्राज्यवाद की भाषा रही है। इसलिए आज यह भाषा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दिखाई देती है। ठीक इसी तरह जापान, जर्मनी, रूस, चीन आदि देशों ने तो ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी साहित्य संस्कृति शिक्षा और मनोरंजन तथा अंतरराष्ट्रीय

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn.) Estd 1983
Co-ordinator IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani